The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# आधुनिक परिप्रेक्ष्य में श्री राम का आदर्श चरित्र

**जगदेव शर्मा** (रिसर्च स्कॉलर)

शोधकेंद्र :महारानी लक्ष्मीबाई शासकीय उत्कृष्ट महाविद्यालय,ग्वालियर,म.प्र., ईमेल : sharmadevkumar95@gmail.com

**DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17130268**

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**

**Accepted:** 26-08-2025

**Published:** 10-09-2025

**Keywords:**

*मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, रामराज्य, आधुनिक परिप्रेक्ष्य, कर्त्तव्यनिष्ठ, आदर्श चरित्र, भारतीय संस्कृति, राजधर्म, समन्वयवादी चरित्र*

**ABSTRACT**

"आधुनिक परिप्रेक्ष्य में श्री राम का आदर्श चरित्र" विषयक यह शोध भारतीय सांस्कृतिक और नैतिक धरोहर में श्रीराम के स्थान का पुनर्मूल्यांकन करता है। श्रीराम का चरित्र जो मर्यादा, सत्य, धर्म, करुणा, और कर्त्तव्य के उच्चतम मानकों पर आधारित है। आज के बदलते सामाजिक, राजनीतिक, और पारिवारिक परिवेश में नई प्रासंगिकता प्राप्त कर रहा है। यह अध्ययन विशेष रूप से इस बात पर केंद्रित है कि आधुनिक युवा पीढ़ी और नेतृत्वकर्ता किस प्रकार श्रीराम के आदर्शों से प्रेरणा लेकर नैतिक निर्णय, सामाजिक उत्तरदायित्व और आत्मनियंत्रण जैसे गुणों को अपने जीवन में आत्मसात कर सकते हैं। शोध प्राचीन ग्रंथों, तुलनात्मक साहित्य, तथा आधुनिक सामाजिक प्रवृत्तियों के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास करता है,कि श्रीराम का आदर्श चरित्र न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक है, बल्कि एक सार्वकालिक नैतिक दृष्टिकोण का मार्गदर्शक भी है। आधुनिक समाज में नैतिक मूल्यों और आदर्शों के क्षरण के बीच, श्री राम के चरित्र को एक प्रेरणास्रोत के रूप में किस प्रकार पुनर्परिभाषित किया जा सकता है? यह शोधपत्र रामायण में वर्णित श्री राम के आदर्श जैसे - सत्य, कर्त्तव्यनिष्ठा, एवं संयम वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक संदर्भों में कितने प्रासंगिक हैं। इसके साथ ही यह शोध यह भी मूल्यांकन करेगा कि आधुनिक युवा पीढ़ी के लिए श्री राम का आदर्श चरित्र नैतिक नेतृत्व और आचरण के लिए कैसे मार्गदर्शक बन सकता है?

## भूमिका :

भारतीय संस्कृति और सभ्यता के केंद्रीय पात्रों में मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम एक अत्यंत प्रभावशाली व्यक्तित्व हैं। वे न केवल एक पौराणिक चरित्र , बल्कि एक जीवन-दर्शन, एक मर्यादा और एक नैतिक प्रतिमान के रूप में पूजे जाते हैं। श्री राम जी का चरित्र

वाल्मीकि रामायण, तुलसीदास कृत रामचरितमानस, अधुनातन लेखन, लोककथाओं, नाटकों और फिल्मों के माध्यम से निरंतर सामाजिक चेतना में जीवित है।

आज समाज जब नैतिक अवमूल्यन, सामाजिक विघटन और नेतृत्व संकट से जूझ रहा है, श्री राम का चरित्र न केवल सांस्कृतिक बल्कि नैतिक व सामाजिक आदर्श के रूप में पुनः विचारणीय हो उठा है। इस शोध पत्र का उद्देश्य है कि मर्यादापुरुषोत्तम श्री राम के आदर्श चरित्र की आधुनिक समय में प्रासंगिकता का गहनता से मूल्यांकन करना।

**शोध उद्देश्य :**

- श्री राम के चरित्र के प्रमुख आयामों का विश्लेषण करना।
- आधुनिक सामाजिक, राजनीतिक और पारिवारिक संरचना में श्री राम के आदर्शों की प्रासंगिकता को समझना।
- रामराज्य की अवधारणा का आधुनिक शासन तंत्र के संदर्भ में विश्लेषण करना।
- सांस्कृतिक व नारी विमर्शों में श्री राम के चरित्र की आलोचना और प्रशंसा के द्वैत को संतुलित दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना।

**शोध पद्धति :**

यह शोध मुख्यतः विश्लेषणात्मक एवं गुणात्मक पद्धति पर आधारित है।

- साहित्यिक स्रोत (वाल्मीकि रामायण, रामचरितमानस, आधुनिक लेखन),
- दर्शन व समाजशास्त्र आधारित माध्यमों (आधुनिक नारी विमर्श, नेतृत्व सिद्धांत),
- तथा मीडिया व लोकसाहित्य (टीवी/फिल्मों में राम की छवि) का अध्ययन किया गया है।

## श्रीराम का आदर्श चरित्र: पारंपरिक दृष्टिकोण

**धारणाद्धर्ममित्याहुर्धर्मेण विधृताः प्रजाः।**

**यः स्याद्धारणसंयुक्तः स धर्म इति निश्चयः।।**[1]

समाज, प्रजा या सब प्राणियों की उन्नति हो वही धर्म है। धर्म केवल यज्ञ-हवन नहीं- लौकिक, पारलौकिक, सामाजिक, वैयक्तिक सभी का अस्तित्व उसमें मिलता है। धर्म मर्यादा का वह बंधन है, जिसमें कल्याण निहित होता है। श्रीराम इसी मर्यादा का पालन अपने जीवन में करते हैं। इसलिए पारंपरिक दृष्टिकोण में श्रीराम को "मर्यादा पुरुषोत्तम" कहा गया है अर्थात् वह पुरुष जो मर्यादा की पराकाष्ठा पर आसीन हो। श्रीराम ने जीवन के हर क्षेत्र में मर्यादा, अनुशासन और धर्म का पालन किया। जब उन्हें वनवास मिला, तो उन्होंने पिता की आज्ञा को सर्वोपरि माना और समस्त सुख-वैभव त्यागकर १४ वर्षों के वनवास को सहजता से स्वीकार किया। यह एक ऐसा उदाहरण है जो पारंपरिक भारतीय परिवार प्रणाली में पुत्र के कर्त्तव्यों की आदर्श परिभाषा देता है।

**आदर्श पुत्र और भ्राता:-**

**भरतु प्रानप्रिय पावहिं राजू। बिधि सब बिधि मोहि सनमुख आजू।।**

**जौं न जाऊँ बन ऐसेहु काजा। प्रथम गनिअ मोहि मूढ़ समाजा।।**[2]

पारंपरिक दृष्टिकोण श्रीराम को आदर्श पुत्र और भ्राता के रूप में देखता है। उन्होंने पिता दशरथ की प्रतिज्ञा को सर्वोच्च स्थान दिया और माता कैकेयी की कठिन शर्तों को भी बिना विरोध स्वीकार किया। भाई लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के साथ उनका आत्मिक संबंध उस पारिवारिक समर्पण और सामंजस्य को दर्शाता है, जो भारतीय संस्कृति की नींव रहा है। भरत द्वारा राम के चरण पादुका को राजगद्दी पर रखकर राज करना और श्रीराम का भ्रातृप्रेम, दोनों मिलकर एक आदर्श पारिवारिक बंधन को उजागर करते हैं।

**आदर्श पति और राजा:-**

**एहि बिधि नगर नारि नर करहिं राम गुन गान।**

**सानुकूल सब पर रहहिं संतत कृपानिधान।।**[3]

सीता स्वयंवर के पश्चात श्रीराम ने उन्हें जीवन संगिनी बनाया और वनवास के दौरान हर कठिनाई में उनका साथ निभाया। जब रावण द्वारा सीता का हरण किया गया, तो उन्होंने समस्त वैराग्य और शांति के स्वभाव के बावजूद धर्म की रक्षा हेतु युद्ध का मार्ग अपनाया। पारंपरिक दृष्टिकोण में यह संघर्ष धर्म, नारी की मर्यादा, और पति के कर्तव्य की रक्षा का प्रतीक है। हालाँकि, सीता के अग्नि परीक्षा और परित्याग के प्रसंग पर परंपरागत विचारधारा यह कहती है कि एक राजा को समाज की मर्यादा की रक्षा हेतु अपने निजी सुख-दुख का त्याग करना चाहिए। श्रीराम ने 'राजधर्म' को 'स्वधर्म' से ऊपर रखा और यही उन्हें 'राजर्षि' के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

**धर्म और कर्त्तव्य के प्रतीक:-** पारंपरिक दृष्टिकोण श्रीराम को 'धर्म' के रूप में देखता है। वे सदैव धर्म, सत्य और नीति के मार्ग पर चले। चाहे वह बाली-वध का प्रसंग हो या विभीषण को शरण देना, हर निर्णय धर्म-संगत था। उन्होंने न्याय को सर्वोपरि रखा और अपने शत्रुओं तक के प्रति सहानुभूति, करुणा और नैतिकता का प्रदर्शन किया।

**आदर्श नेतृत्व और प्रशासन:-**

**सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् , न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियम् ।**

**प्रियं च नानृतम् ब्रूयात् , एष धर्मः सनातनः ॥**[4]

रामराज्य पारंपरिक रूप से भारतीय आदर्श शासन प्रणाली का प्रतीक रहा है जहाँ कोई दुखी नहीं था, कर और कानून न्यायपूर्ण थे, और शासन नैतिक मूल्यों पर आधारित था। तुलसीदास की रामचरितमानस में यह वर्णन मिलता है कि **"दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।।"**[5] राम राज्य में किसी को भी शारीरिक, दैवीय या भौतिक कष्ट नहीं होता, सब

मनुष्य आपस में प्रेम करते हैं और वेदों में बताई गई नीति का पालन करते हैं। रामराज्य में, उक्त तीनों प्रकार के कष्टों से मुक्ति होती है, और सब लोग प्रेम और सद्भाव से रहते हैं। श्रीराम की यह प्रशासनिक व्यवस्था भारत की लोकनीति और सुशासन की अवधारणाओं में आज भी प्रासंगिक है।

**मानव और ईश्वर के बीच सेतु:-**

**राम, तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या?**

**विश्व में रमे हुए नहीं सभी कहीं हो क्या?**

**तब मैं निरीश्वर हूँ, ईश्वर क्षमा करें;**

**तुम न रमो तो मन तुममें रमा करे।'**[6]

पारंपरिक दृष्टिकोण श्रीराम को ईश्वर का अवतार मानता है, किंतु उनके जीवन के प्रसंगों में जो मानवोचित भावनाएँ दुख, त्याग, संकोच, संकल्प, पीड़ा दिखाई देती हैं, वे उन्हें मानव और ईश्वर के बीच सेतु बना देती हैं। वे ऐसे ईश्वर हैं जो मनुष्य की पीड़ा को स्वयं अनुभव करते हैं।

## श्रीराम का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नैतिकता और नेतृत्व

श्रीराम भारतीय संस्कृति के ऐसे आदर्श पुरुष हैं, जिनके चरित्र में नैतिकता और नेतृत्व का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। वाल्मीकि की रामायण और तुलसीदास की रामचरितमानस के माध्यम से श्रीराम का चरित्र न केवल धार्मिक आदर्श बना, बल्कि आज के वैश्विक और आधुनिक समाज में एक नैतिक और नेतृत्वात्मक प्रतिमान के रूप में भी स्थापित हो गया है। यह आलेख श्रीराम के चरित्र के माध्यम से नैतिकता और नेतृत्व को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास करता है।

**श्रीराम के जीवन में नैतिकता की अवधारणा:-** नैतिकता का अर्थ है जीवन के निर्णयों में सत्य, न्याय, करुणा, समता और उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का पालन करना। श्रीराम का संपूर्ण जीवन ऐसे नैतिक मूल्यों का प्रतिरूप है:

- **सत्यनिष्ठा:-** पिता दशरथ द्वारा दिए गए वचन के सम्मान में श्रीराम ने राजगद्दी का त्याग कर 14 वर्षों का वनवास स्वीकार किया। यह निर्णय न केवल व्यक्तिगत नैतिकता का उदाहरण है, बल्कि पारिवारिक और सामाजिक प्रतिबद्धता की पराकाष्ठा भी है।
- **न्यायप्रियता:-**

**दृश्यते न च कार्यार्थी रामे राज्यं प्रशासति ।**

**लक्ष्मणः प्राञ्जलिर्भूत्वा रामायैवं न्यवेदयत् ।।**[7]

रामराज्य में कभी कोई पीड़ित अपना अभियोग लेकर न्याय हेतु नहीं आता था। यह समाचार लक्ष्मण जी द्वारा श्रीरामचंद्र जी को राज्य की न्यायप्रियता की स्थिति के बारे में दिया गया। न्यायप्रिय राम का जीवन राजनीति में प्रशासन, व्यवस्था, समता, राजदंड, न्याय तथा निष्पक्ष नीति का सुंदर एवं व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत करता है। जो विश्व के समस्त राजनीतिज्ञों के लिए अनुकरणीय

होना चाहिए। राम ने रावण के साथ युद्ध को केवल व्यक्तिगत शत्रुता के आधार पर नहीं, बल्कि सीता के अपहरण और स्त्री के सम्मान की रक्षा के लिए लड़ा।

- **राजधर्म का पालन:-** 'मर्यादा पुरुषोत्तम' की संज्ञा प्राप्त श्रीराम ने अपने व्यक्तिगत सुख से ऊपर समाज और राज्यहित को प्राथमिकता दी। सीता का परित्याग, भले ही विवादास्पद हो, परन्तु वह राजा के उत्तरदायित्व की दृष्टि से किया गया था।

**नेतृत्व के गुण: श्रीराम के दृष्टांत:-** श्रीराम केवल एक धर्मपरायण पुत्र और पति ही नहीं, बल्कि एक सर्वश्रेष्ठ नेता भी थे। उनके नेतृत्व के निम्नलिखित गुण आज के संदर्भ में भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

- **उदाहरण प्रस्तुत करने वाला नेतृत्व** - श्रीराम ने हर उस कार्य को स्वयं किया जिसकी अपेक्षा उन्होंने दूसरों से की। जैसे कि वनवास के समय लक्ष्मण और सीता के साथ समता से रहना, वनवासियों से संवाद करना, युद्ध में आगे बढ़कर नेतृत्व करना।
- **समावेशी नेतृत्व – सहज सनेह राम लखि तासू। संग लीन्ह गुह हृदयँ हुलासू।।**[8]
  राम की सेना में वनवासी, वानर, भालू, राक्षस और सामान्य जन भी सम्मिलित थे। शबरी से प्रेम और निषादराज को मित्र बनाना उनकी सामाजिक समरसता को दर्शाता है। राम जी के व्यक्तित्व में मानवता और आत्मीयता का इतना प्रबल आकर्षण के निषादराज के स्वाभाविक स्नेह को पहचानकर राम जी उसे अपने संग ले लेते हैं।
- **रणनीतिक नेतृत्व** - लंका पर आक्रमण हेतु समुद्र से संवाद, पुल निर्माण और विभीषण को सहयोगी बनाना श्रीराम के दूरदर्शी, कूटनीतिज्ञ और संवादात्मक नेतृत्व के प्रतीक हैं।
- **मानवीय नेतृत्व** - सीता की पीड़ा, भरत के प्रति प्रेम, हनुमान की भक्ति का सम्मान। ये सभी श्रीराम की संवेदनशीलता और भावनात्मक समझ का परिचय देते हैं। आज की कॉर्पोरेट या राजनीतिक दुनिया में यह "emotional intelligence" की महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।

## श्रीराम के चरित्र पर युवा दृष्टिकोण

भारतीय सांस्कृतिक चेतना में श्रीराम केवल एक धार्मिक प्रतीक नहीं हैं, बल्कि वे जीवन-मूल्यों, मर्यादा, कर्त्तव्य और आदर्श नेतृत्व के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित हैं। रामायण के माध्यम से उनका चरित्र न केवल पौराणिक आख्यान बनकर रह गया है, बल्कि वह भारतीय जनमानस में नैतिक मार्गदर्शन का आधार भी बन चुका है। परंतु आज के युवा श्रीराम को केवल एक ईश्वर रूप में नहीं, बल्कि एक मानवीय दृष्टिकोण से भी देखते हैं। एक ऐसा व्यक्तित्व जो संघर्ष, त्याग और आत्मसंयम से परिपूर्ण है।

**मर्यादा पुरुषोत्तम या संघर्षशील मानव? -** वर्तमान पीढ़ी श्रीराम को आदर्श पुरुष के रूप में देखती अवश्य है, परंतु वह उनके भीतर छिपे संघर्षशील मनुष्य को भी पहचानने लगी है। एक युवा राजकुमार होते हुए उन्होंने पिता की आज्ञा शिरोधार्य कर चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार किया। यह निर्णय कर्त्तव्यपरायणता और आत्मसंयम का अद्भुत उदाहरण है। आज के युवा इसे व्यक्तिगत इच्छाओं पर सामाजिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता देने की प्रेरणा के रूप में देखते हैं।

**निर्णय क्षमता और नेतृत्व कौशल -** श्रीराम के निर्णयों में स्पष्ट उद्देश्य, सामरिक रणनीति और नेतृत्व क्षमता दिखाई देती है। चाहे वह सुग्रीव से मैत्री हो, वानर सेना का गठन, या रावण से युद्ध राम हर स्थिति में विचारशील, संयमित और नैतिक रहे। आज की युवा पीढ़ी इसमें टीमवर्क, संकट-प्रबंधन और मूल्यपरक नेतृत्व की प्रेरणा पाती है।

**भावनात्मक द्वंद्व और आत्मसंघर्ष -** श्रीराम का जीवन केवल आदर्शों का संकलन नहीं था, अपितु वे गहरे व्यक्तिगत और सामाजिक द्वंद्वों से भी जूझे। सीता का परित्याग एक ऐसा निर्णय था, जिसे लेकर आज के युवा विविध दृष्टिकोण अपनाते हैं। वे इसे राजधर्म और निजी धर्म के संघर्ष के रूप में देखते हैं, जिससे यह संदेश मिलता है कि जीवन में कई बार कठिन निर्णय भावनात्मक नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक उत्तरदायित्व से प्रेरित होते हैं।

**पारिवारिक मूल्यों की आधुनिक व्याख्या** –

**राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती।**

**नाना भाँति सिखावहिं नीती।।**[9]

राम अपने माता-पिता, भाइयों और पत्नी के प्रति जिस प्रकार निष्ठावान रहे, वह आज की पीढ़ी को पारिवारिक मूल्यों और भावनात्मक बुद्धिमत्ता की शिक्षा देता है। लक्ष्मण के प्रति उनका आत्मीय स्नेह, भरत के लिए आदर और सीता के प्रति सम्मान, आधुनिक संबंधों की पुनर्व्याख्या के लिए प्रेरणादायक हैं। राजा बनने पर भी राम ने समानता के सिद्धांत का त्याग नहीं किया।भोजन,भजन,रहन-सहन आदि सभी कार्य भाइयों के साथ बिना किसी भेदभाव के करना पारिवारिक मूल्यों की आदर्श स्थिति है।

**नारी दृष्टिकोण और सामाजिक जिम्मेदारी -** युवा वर्ग आज श्रीराम के चरित्र का मूल्यांकन लैंगिक संवेदनशीलता के दृष्टिकोण से भी करता है। सीता की अग्निपरीक्षा का प्रसंग आज के सामाजिक विमर्श में आलोचना का विषय है, परंतु कुछ युवा इसे उस युग की सामाजिक अपेक्षाओं और एक राजा की उत्तरदायित्वपूर्ण भूमिका के रूप में समझते हैं। यह उन्हें सिखाता है कि कभी-कभी निजी भावनाएं समाजिक धर्म के सामने गौण हो जाती हैं।

**धर्म और आधुनिक मूल्यबोध का संतुलन -** श्रीराम का जीवन इस तथ्य को उजागर करता है कि धार्मिक सिद्धांत आधुनिक जीवन के नैतिक मूल्यों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं। वे धर्म का पालन करते हुए भी सामाजिक कल्याण, न्याय और लोकहित की भावना से प्रेरित कार्य करते हैं। युवा पीढ़ी इसमें धर्मनिरपेक्ष सोच, सामाजिक न्याय और नैतिक उदारता के तत्व देखती है।

**आत्मपहचान और प्रेरणा का स्रोत -** आज का युवा आत्म-संदेह, प्रतिस्पर्धा और अनिश्चितताओं से जूझता है। श्रीराम के जीवन संघर्षों से उसे यह बोध होता है कि महानता का मार्ग आसान नहीं होता। श्रीराम का आत्मबल, धैर्य और नैतिक दृढ़ता उन्हें आंतरिक मजबूती और उद्देश्यपरक जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं। समकालीन युवा श्रीराम को केवल एक पूजनीय देवता नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक, सजीव और संघर्षशील मानव के रूप में देखते हैं। उनका जीवन आज भी नेतृत्व, न्याय, कर्तव्य

और सहिष्णुता का आदर्श प्रस्तुत करता है। यदि युवा वर्ग श्रीराम के चरित्र को आत्मसात करता है, तो वे न केवल नैतिक दृष्टि से सशक्त बनेंगे, बल्कि समाज में अधिक उत्तरदायी और संतुलित भूमिका निभाने में भी सक्षम होंगे।

## मीडिया एवं सांस्कृतिक पुनर्प्रस्तुति

श्रीराम भारतीय सांस्कृतिक चेतना के केंद्र में स्थित एक ऐसे आदर्श चरित्र हैं, जिनका प्रभाव केवल धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विमर्शों में भी व्यापक रूप से देखा जाता है। रामायण के माध्यम से प्रस्तुत श्रीराम का चरित्र युगों से भारतीय समाज को नैतिक मार्गदर्शन देता रहा है। परंतु 21वीं सदी के मीडिया-प्रधान समाज में श्रीराम का यह आदर्श चरित्र नए सिरे से प्रस्तुत, पुनर्परिभाषित और पुनर्प्रस्तुत किया जा रहा है। आज के समय में, जहाँ दृश्य-श्रव्य माध्यम, डिजिटल मंच और जनसंचार के साधन प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं, वहाँ श्रीराम का चरित्र केवल धार्मिक भावना नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विमर्श और सामाजिक दृष्टिकोण का हिस्सा बन चुका है।

**श्रीराम: पारंपरिक आदर्श से आधुनिक प्रतीक तक:-** पारंपरिक दृष्टिकोण में श्रीराम "मर्यादा पुरुषोत्तम" के रूप में पूजित हैं। वे सत्य, धर्म, कर्तव्य और त्याग की मूर्ति हैं। किंतु आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उनका चरित्र एक ऐसे नैतिक नेता, सुसंस्कृत नागरिक और संवेदनशील मानव के रूप में उभरता है जो कठिन निर्णय लेते हुए भी लोककल्याण को प्राथमिकता देता है। आज के समाज में यह आदर्श केवल धार्मिक श्रद्धा का विषय नहीं रह गया है, बल्कि जीवन-शैली, नेतृत्व और व्यक्तिगत आचरण के प्रतिमान के रूप में देखा जाने लगा है।

**मीडिया में श्रीराम की पुनर्स्थापना:-** टेलीविजन और सिनेमा ने श्रीराम की छवि को व्यापक जनसंपर्क माध्यमों के जरिए पुनर्जीवित किया है। 1987 में दूरदर्शन पर प्रसारित रामानंद सागर की रामायण ने जिस तरह श्रीराम की छवि को घर-घर में प्रतिष्ठा दिलाई, वह सांस्कृतिक पुनर्प्रस्तुति का प्रारंभिक बिंदु था। उसके बाद कई अन्य टेलीविजन शृंखलाओं, एनिमेशन फिल्मों, वेब सीरीज़ और वृत्तचित्रों ने श्रीराम को युवा पीढ़ी के समक्ष नई व्याख्याओं के साथ प्रस्तुत किया। डिजिटल युग में YouTube, OTT प्लेटफॉर्म्स और सोशल मीडिया पर श्रीराम से जुड़े कथानक, संवाद और विचारधाराएं निरंतर प्रसारित हो रही हैं। इनमें श्रीराम को कभी योद्धा, कभी प्रशासक, कभी उदार शासक, तो कभी संघर्षशील मानव के रूप में चित्रित किया जा रहा है। यह विविधता उनके चरित्र को स्थिर नहीं, बल्कि संवादात्मक बनाती है।

**सांस्कृतिक पुनर्परिभाषा और जनभावना:-** रामलीला, मंचन और लोककला के माध्यम से श्रीराम की छवि का जीवंत रूप में पुनर्परिस्थापन होता रहा है। विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग रूपों में श्रीराम के चरित्र की व्याख्या की जाती है। कहीं वे आदर्श पुत्र हैं, कहीं वीर पति, कहीं न्यायप्रिय राजा। आज के युवाओं और शहरी समाज में, श्रीराम की छवि को मानवीय संवेदनाओं और आत्मसंघर्षों के साथ जोड़ा जा रहा है। उदाहरणस्वरूप, सीता पर अग्निपरीक्षा जैसे प्रसंगों पर समकालीन आलोचनात्मक दृष्टि भी उभर रही है, जहाँ श्रीराम के निर्णयों को नए नैतिक मापदंडों से परखा जाता है। यह प्रक्रिया श्रीराम के चरित्र को निष्क्रिय पूजनीयता से बाहर निकाल कर सांस्कृतिक विमर्श का विषय बनाती है।

**राजनीतिक विमर्श में श्रीराम का प्रयोग:-** श्रीराम का चरित्र कई बार राजनीतिक मंचों पर भी प्रयुक्त होता है। रामराज्य को आदर्श शासन व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। जिसमें न्याय, समानता, धर्मनिष्ठा और लोककल्याण की भावना

अंतर्निहित है। मीडिया में यह विमर्श भी व्यापक रूप से देखा गया है, विशेषकर चुनावों और राजनीतिक घोषणाओं के दौरान। हालाँकि, राजनीतिक उपयोग के साथ-साथ श्रीराम की छवि का राजनीतिकरण भी एक गंभीर मुद्दा बना है, जहाँ धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकों का राजनीतिक लाभ के लिए पुनराविष्कार किया जाता है। इससे एक ओर जनसामान्य में राम के प्रति चेतना बढ़ती है, वहीं दूसरी ओर यह विचारणीय भी है कि क्या यह पुनर्प्रस्तुति उनकी मूल शिक्षाओं के अनुरूप है।

**आधुनिक युवा की दृष्टि में श्रीराम:-** आज का युवा श्रीराम के आदर्शों को केवल धार्मिक आस्था के माध्यम से नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण और नैतिक दृष्टिकोण से देखता है। वह उनके जीवन से आत्मसंयम, कर्तव्यबोध, नेतृत्व क्षमता, धैर्य और संकट-प्रबंधन जैसे गुणों को आत्मसात करना चाहता है। श्रीराम की संघर्षशीलता, वनवास में उनकी विनम्रता, मित्रता निभाने की दृढ़ता, तथा रावण जैसे विद्वान शत्रु से युद्ध करते समय भी मर्यादा का पालन – ये सभी गुण उन्हें एक ऐसे आदर्श के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिसकी आवश्यकता आज के अनिश्चित, उपभोक्तावादी और संवेदनहीन समाज में पहले से कहीं अधिक है।

**निष्कर्ष :**

श्री राम का चरित्र समयातीत है। वे केवल आदर्श नहीं, बल्कि समाज की जटिलताओं से जूझते हुए मानवीय द्वंद्वों को सुलझाने वाले नायक हैं। उनके निर्णय, उनकी निष्ठा, उनका त्याग और उनका नेतृत्व आज के सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक व सांस्कृतिक संकटों के समाधान प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान संदर्भ में श्री राम न केवल धार्मिक आस्था के केंद्र हैं, बल्कि भारतीय मानस की सांस्कृतिक चेतना के वाहक भी हैं। उनकी व्याख्या को एकतरफा श्रद्धा या आलोचना तक सीमित नहीं किया जा सकता। आवश्यकता इस बात की है कि उनके चरित्र को आधुनिक मूल्यों, विमर्शों और चुनौतियों के साथ संवाद में रखा जाए ताकि वह प्रेरणा का अक्षय स्रोत बने रहें। उनका नेतृत्व आज भी सामाजिक,राजनैतिक और पारिवारिक संकटों का समाधान प्रस्तुत करता है।

**संदर्भ ग्रंथ :-**


1) महाभारत,शान्तिपर्व,१०९/११/१०
2) श्रीरामचरित्मानस,अयोध्याकाण्ड,दोहाक्रमांक-४२/१-२
3) श्रीरामचरित्मानस,उत्तरकाण्ड,दोहाक्रमांक-३०
4) मनुस्मृति,४.१३८
5) श्रीरामचरित्मानस,उत्तरकाण्ड,दोहाक्रमांक-२१/१
6) गुप्त,मैथिलीशरण,साकेत,अष्टम सर्ग
7) वाल्मीकि रामायण,प्रक्षिप्त सर्ग-१/१०-११
8) श्रीरामचरित्मानस,अरण्यकाण्ड,दोहाक्रमांक-१०४/७
9) श्रीरामचरित्मानस,उत्तरकाण्ड,दोहाक्रमांक-२५/३